उपन्यास के तत्वों के आधार पर मैला आंचल की समीक्षा

भाग - ३

डॉ क्षमा मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग
श्री जे एन पीजी कॉलेज लखनऊ

मैला आंचल में देशकाल तथा वातावरण

उपन्यास में वर्णित पात्र तथा उनसे संबद्ध घटनाएं एक विशेष परिवेश में घटित होती है। अपनी सामाजिक व्यवस्था में उस समाज के अपनेआचार- विचार ,रीति- रिवाज, वेशभूषा , भाषा शैली ,सामाजिक ,धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश होता है। इन सभी कारकों का प्रभाव उपन्यास की संपूर्ण कथा में हमें दृष्टिगत होता है। आंचलिक उपन्यासों के संदर्भ में यह तत्व और भी महत्वपूर्ण प्रतीत होने लगता है क्योंकि वहां यह तत्व मात्र एक तत्व नहीं अपितु उस रचना के मुख्य पात्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। रेणु के आंचलिक उपन्यास मैला आंचल में मिथिलांचल अपने विविध वर्णी रूपों में उभर कर सामने आया है । घटनाओं का प्रमुख आधार स्थल मेरी गंज क्षेत्र है , जो कि पूर्णिया जिले के पूर्वी अंचल का एक छोटा सा गांव है। यह क्षेत्र मलेरिया और कालाजार जैसे रोगों से पीड़ित है । बिहार का मेरी गंज पिछड़े गांवों का प्रतीक भर नहीं बल्कि' ग्राम वासिनी भारत माता' के 'धूल भरे मैले से अंचल ' का संपूर्ण चित्र बनकर उभरता है। इस स्थान के नामकरण के पीछे की कथा भी वर्णित है जो स्थान विशेष से जुड़ने का आरंभिक सूत्र बनती है। उपन्यास में यथार्थता तथा सजीवता की सृष्टि करने में इस तत्व का विशेष योगदान रहा है।

मेरी नामक स्त्री की मलेरिया से मृत्यु होने के पश्चात ही गांव का नामकरण मेरी गंज हुआ। मलेरिया और कालाजार के अतिरिक्त गरीबी और जहालत जैसे रोगों से जूझते इस गांव में इस डॉ प्रशांत का आगमन इन सभी रोगों के गांव से निर्मूलन हेतु होता है । ऐसा प्रतीत होता है कि रेणु का प्रमुख उद्देश्य इस अंचल के समाज का चित्रण प्रस्तुत करना रहा है संभवत यही कारण है कि उन्होंने प्राकृतिक चित्रण की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। विभिन्न वर्गों और जाति के पात्रों का यथा तथ्य वर्णन ,गीत ,त्यौहार -कथाओं का वर्णन , देश काल को प्रभावशाली बनाता है ।

देश काल तथा वातावरण का सूक्ष्म विवेचन-

रेणु द्वारा देश काल और वातावरण का अत्यंत सूक्ष्मता के साथ विवेचन किया गया है ।यथा -

यादवों के लाठियां लेकर राजपूत टोले की ओर भागने पर खूटे में बंधे हुए बैलो के कान खड़े हो जाते हैं और गांव के बाहर चरने वाली बकरियां मिमियाती हुई गांव में भागी चली आती है।

किसी प्रकार भंडारे की घोषणा के समय तुरई की आवाज सुनते ही गांव के कुत्ते गलने गुट्टे दल बांधकर भौंकना शुरू कर देते हैं और छोटे-छोटे नवजात पर ले तो भोंकते भोंकते परेशान ही हैं।

प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन -

प्राकृतिक वर्णन भी कहीं-कहीं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत हुआ है । डॉ प्रशांत के आगमन पर गांव का जो वर्णन है उसमें उपन्यासकार द्वारा प्रकृति का एक सुंदर शब्द चित्र अंकित किया गया है। निम्न पंक्तियां दृष्टव्य है -

"गेहूं की सुनहरी बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है । सारे गांव के लोग खेतों में हैं। मानों सोने की नदी में ,कमर भर सुनहरे पानी में सारे गांव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं । सुनहरी नहरे! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियां,, झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग ,कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे। डॉक्टर को सभी चीजें नयी लगती है।"(पृष्ठ संख्या १४७-४८)

एक आने स्थान पर चैट की गुठली में अपनी सारी तेजी को कर चैत की गोधूलि में अपनी सारी तेजी को कर सूरज ने श्याम सलोनी संध्या के आंचल में अपना मुंह छुपा लिया है था दूर तक फैली हुई तारों की पंक्तियां कुछ मठ में कुछ सिंदूरी

सी पृष्ठभूमि में गर्दन ऊंची करके सूरज को अतल गहराई में डूबते हुए देख रही थी गाय बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे सावित्री नाच का गीत गा रहे थे। "(पृष्ठ संख्या -१५४-५५)

निलोत्पल के जन्म के अवसर पर उसे प्रकृति से संबद्ध कर रेणु लिखते हैं-

" भुरुकुवा तारा जगमग कर रहा है । कमला नदी के गड्ढे में उसकी छाया झिलमिला रही है ।लगता है ,नील कमल खिला है ।"(मैला आंचल ,पृष्ठ संख्या ३७३)

<u>लोकगीतों तथा लोक कथाओं द्वारा सामाजिक संस्कृति का चित्रण</u>

कथा में लोकगीतों लोक कथाओं अपने रंग बिखेरे है। लोरिक विज्जेभान की कथा, सरंगा सदाबृज की कथा आदि इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। चैती ,बटगवनी , फगुआ आदि के गीत ,जाट जटिन का खेल जिसे देखने का अधिकार सिर्फ स्त्रियों को है ,भी वर्णित किए गए हैं जो कथा में रोचकता की सृष्टि करने में सफल हुए हैं।

त्योहारों में होली ,सतवानी , सिखा आदि का उल्लेख है। इन पर्वों से संबंधित गीतों का उल्लेख ही कथा में हुआ है। डॉ प्रशांत कमला से कहते हैं -" सिंदूर लगाते समय जिस लड़की की नाक के ऊपर चढ़कर गिरता है ,वह अपने पति की बड़ी दुलारी होती है।" चैत्र संक्रांति के दिन सत्तू खाने का रिवाज सतवानी पर्व के रूप में प्रचलित है। इसी प्रकार साल के प्रारंभ में पहली वैशाख को सिखा पर्व होता है सिखा पर्व के दिन गांव के लोग सामूहिक रूप में मछली का शिकार करते हैं । घरों में चूल्हा नहीं जलाया जाता । रात को पकाई हुई चीजें ही खाई जाती हैं ।इसी दिन जमीदार लोग अपना नया खाता खोलते हैं।

मेरी गंज गांव के निकट ही जंगलों में संथालों की बस्ती है परंतु उनके रीति रिवाज क्षेत्र से भिन्न है । इनके रीति रिवाजों का भी संक्षिप्त विवरण हमें उपन्यास में प्राप्त होता है।

उपरोक्त वर्णन के अतिरिक्त क्षेत्र की वेशभूषा आदि का भी संक्षिप्त विवरण पात्रों द्वारा के हुआ है । यथा -15 अगस्त के दिन कमली इस अंचल में धारण किए जाने वाले अनेक प्रकार के गहनों से सुसज्जित हो कर डॉक्टर के पास पहुंचती है । उसके शरीर पर बांक, हंसूली ,बाजू ,कंगना , चूर, झंझनी आदि गहने इस अंचल विशेष के आभूषणों के विषय में सूचित करते हैं।

<u>विविध ऋतुओं एवम् आंचलिक जीवन के संबंधों की अभिव्यक्ति-</u>

यद्यपि उपन्यास का घटनाकाल अत्यंत संक्षिप्त है। प्रशांत सन 1947 के प्रारंभ में घोर शीत ऋतु में पहुंचते हैं । उनके पहुंचने के दिन सेवादास की ओर से सारे गांव को भंडारा दिया जाता है । इस समय माघ का जाडा पड़ रहा था। ठंडी रात का वर्णन करते हुए रामदास कहता है-

" सुई की तरह गड़ने वाली , माघ के भोर की ठंडी हवा का कोई देह पर असर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह शून्य हो जाता है । जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छुई जाती ,तब घूर में फिर से सूखे पुआल डालकर नई आग पैदा की जाती है।" (मैला आंचल पृष्ठ संख्या-९२)

माघ के बाद फागुन में होली के गीत गाए जा ने लगते हैं । जोगीडा,और भदौआ के गीतों से संपूर्ण वातावरण मदमस्त हो जाता है। फागुन के बाद चैत और वैशाख का सिखा पर्व आता है । जेठ की तपती गर्मी के पश्चात आषाढ़ का प्रारंभ होता है । जिसमें बादला मादल बजाना प्रारंभ हो जाता है।

बरसात के समय में ही 15 अगस्त 1947 को आजादी का उत्सव मनाया जाता है । बरसात के वर्षा के पश्चात शरद और हेमंत का आगमन होता है। हेमंत के आगमन में लोग जाड़े से कांप रहे थे इन्हीं दिनों महात्मा गांधी की हत्या का समाचार आता है ।माघ से प्रारंभ उपन्यास पुनः माघ तक पहुंचता है । माघ में ही गांधी जी का श्राद्ध है इन्हीं दिनों में बावन दास देश के लिए प्राण न्योछावर करते हैं । इसी बलिदान के साथ उपन्यास का अंत हो सकता था किंतु लेखक उपन्यास के अंतिम तीन परिछेद जोड़ कर कथा को विराम देते हैं। भोर के तारे का जल में झीलमिलाना , नीलोत्पल का

जन्म ,और तहसीलदार विश्वनाथ का मन परिवर्तन आदि घटनाएं अत्यंत महत्वपूर्ण है जो कथा में आशावादिता का संचार करती है।